Quest Journals
Journal of Education, Arts, Law and Multidisplinary
Volume 15 ~ Issue 6 (Nov. – Dec. 2025) pp: 94-97
ISSN(Online): 2347-2895
www.questjournals.org

Research Paper

मैथिली कथा साहित्य

अनामिका

नेट, मैथिली

आधुनिक मैथिली साहित्यक लोकप्रिय एवं प्रख्यात साहित्यकारक रुप मे प्रो. हरिमोहन झाक नाम महत्त्वपूर्ण अछि। ई साहित्यिक प्रतिभासँ मैथिली भाषाक तीव्र गतिसँ प्रचार-प्रसार भेल। मैथिली भाषा के वर्ग तैयार करबा मे मैथिली भाषा कैं आन भाषा-भाषी सँ सम्मान दिएबामे तथा भाषा कैं आगे बढेबा मे प्रो. हरिमोहन झाक योगदान अहम एवं अद्वितीय अछि। प्रो. हरिमोहन झा अपन विलक्षण प्रतिभा सँ लाखो-लाखो पाठक वर्ग कैं मनोरंजन, आकर्षित, शिक्षित एवं सुसंस्कृत करैत रहलाह। प्रो. झा अनेको विधा सँ मैथिली साहित्यक भंडार कैं भरलनि। हिनक द्वारा लिखल गेल महत्त्वपूर्ण विधा अछि, उपन्यास, कथा, गल्प, एकांकी, प्रहसन, निबंध, आत्म-कथा, कविता आदि। विभिन्न विधा मे हिनक महत्त्वपूर्ण रचना अछि उपन्यासक रुप मे 'कन्यादान आ द्विरागमन' कथा संग्रहक रुप मे 'प्रणम्य देवता, रंगशाला, एकादशी, चर्चरी, गल्पक रुप मे 'खट्टर काकाक तरंग' आत्म कथा के रुप मे 'जीवन यात्रा' आदि।

हिनक उपन्यास मे प्रयुक्त गप्प शैली, भाषा अत्यंत रोचक, प्रवाहपूर्ण, आकर्षक, हृदयग्राही अछि। एहि मे तत्कालीन मिथिलाक ग्राम जीवनक यथार्थ एवं साकार चित्रण भेल अछि तथा समाजक विकृति कैं सुन्दर रीति सँ व्यंग्यात्मक रुप मे प्रस्तुत कयल गेल अछि जे सर्वसाधारणक लेल आकर्षणक केन्द्र बनि गेल। उपन्यास मे हास्य-व्यंग्यक माध्यम सँ विषय वस्तुकें एहि रूपे समाओल गेल अछि जे समाजक मात्र मनोरंजन ही नही करैत अपितु समाज कैं सोचबाक लेल विवश सेहो करैत अछि। प्रो. हरिमोहन झा शिक्षाजनित वैवाहिक समस्याकें हास्य-व्यंग्य शैली मे 'कन्यादान' उपन्यासक रचना कयलनि जे मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य निधि सिद्धि भेल। कन्यादानक कथानक, कथोपकथन, वातावरण, चरित्र-चित्रण, शैली ओ उद्देश्य अत्यंत सशक्त ओ सहज रुपे उपन्यासक मध्य अभिलक्षित भेल अछि।

कन्यादान :- 1929 मे मिथिला पत्रिका मे एहि उपन्यासक पेनि (पुनि) छपि देल गेल मुदा कतिपय कारण सँ एकर गाड़ी आगों नहि बढ़ि सकल। पछति प्रो. हरिमोहन झाक पाठक आ प्रशंसक लोकनि ततबा भे आग्रह कयलनि जे हिनका एहि उपन्यास कैं पुरा करय पड़लनि आ 1933 ई0 मे ई पुस्तक भंडार सँ प्रकाशित भेल। मिथिलाक वैवाहिक समस्या, अनमेल विवाह, अशिक्षा आदि सब समस्या कैं केन्द्र मे राखि लिखल गेल एहि उपन्यासक नायिका बुच्ची दाइ सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक अमर यात्री बनि गेलीह। हास्यक आवरण मे लपेटल बुच्ची दाइ अर्थात् मिथिलाक बेटीक कारुणिक स्थितिकैं एहि कुशलताक संग एहि उपन्यास मे चित्रित कयल गेल अछि जे आइयो पाठक कैं हँसैत-हँसैत कना दैत अछि। मैथिली मे श्रेष्ठ साहित्यक गरिमा प्राप्त कन्यादान एहन कृति सावित भेल जकरा पढ़बाक हेतु मैथिली भाषी लोकनी मैथिली सिखलनि। कन्यादान मैथिली मे एकटा चमत्कार सिद्ध भेल जे विद्यापतिक बाद बीसम शताब्दी मे एहि भाषा कैं राष्ट्रीय स्तर पर चिन्हार बनौलक।

द्विरागमन :- कन्यादान मे बुच्ची दाइ सन अनपढ़ कनिया कैं छोड़ि कऽ हुनकर वर सी0सी0 मिश्रा पड़ जाइत छथिन। बुच्ची दाइक ई अवस्था मैथिलीक पाठक कैं उद्वेलित कऽ कऽ राखि देलक। बुच्ची दाइक ओ अवस्था सृष्टिकर्ता प्रो. हरिमोहन झा पर पुनः पाठक लोकनिक दवाब पड़य लगलनि जे ओ बुच्ची दाइ सन निमुधिया कैं एना बीच मँझधार मे नहि छोड़थुन। मिथिलाक आने बेटी जकाँ बुच्ची दाइ कैं दाम्पत्य जीवन फेर सँ पटरी पर आयब जाय तकर उपाय करथ। अपन प्रशंसक लोकनिक एहि आग्रह पर प्रो. हरिमोहन झा कन्यादान दोसर भागक प्रणयन द्विरागमन नाम सँ कयलनि जे 1943 मे पुस्तक भंडार सँ प्रकाशित भेल। एहि मे अशिक्षित बुच्चीदाइ कैं हुनकर पतिक इच्छाक अनुरुप पढ़ा-लिखा, विभिन्न ज्ञान मे पारंगत करा अप-टु-डेट लेडी बनाओल जाइत छनि तखने हुनकर द्विरागमन होइत छनि यद्यपि

द्विरागमन मे ओ सहजता नही अछि जे कन्यादान मे अछि। द्विरागमन मे किछु नाटकीयता आबि गेल अछि मुदा ई खण्ड कन्यादानक पूरक बनि एकरा सुखान्त बना दैत अछि। संगेहि इहो संदेश दैत अछि जे विवाहक बादो मिथिलाक नारी कैं शिक्षित कयल जा सकैत छनि। प्रो. हरिमोहन झाक एहि दुनु औपन्यासिक कृतिकैं मिला कऽ 'एहि पर फिल्म सेहो बनाओल गेल अछि। प्रो. हरिमोहन झा अपन कथा विधाक लक्ष्य मैथिली साहित्य कैं महत्त्वपूर्ण योगदान देलनि। कथाक माध्यम सँ समाजक मनोरंजन ही नहि कयलनि अपितु समाजक रुढ़िवादिता, जड़ता, पाखंड, अंधविश्वास छल प्रपंच तथा प्रपंचक दुर्बलता पर सेहो प्रहार कयलनि अपितु मिथिला समाजक मानसिकता कैं ई अपन हास्य व्यंग्य शैलीक माध्यम सँ एहि रूपे चित्रण कयलनि जे पाठक वर्गक लेल अत्यंत रोचक सिद्ध भेल। रूढ़िवादिता ओ धर्मांधताक प्रकरण पर लिखल हिनक कथा सब मे मिथिला वासी पहिल बेर आत्म निरीक्षण कयलनि। हिनक प्रसिद्ध कथा कैं उल्लेखनीय अछि - पाँब पत्र, रेलक अनुभव, कथाक जीवन, मर्यादाक भंग, ग्राम सेविका आदि।

प्रणम्य देवता- ई हिनक हास्य-व्यंग्यपरक कथा संग्रह थिकनि जकर प्रकाशन 1945 ई0 पुस्तक भंडार सँ भेल। एहि कथा संग्रह मे एगारह गोट कथा क्रमशः विकट पाहुन, आदर्श कुटुम्ब, स्थायी आश्रम, घर जमाय, धर्मशास्त्र, फलित ज्योतिष, पंडितजी, कविजी, मदेशक नमूना, आधुनिक पत्नी आ ओडरेजिया बहु अछि। एकहि संग्रहक गल्प मे समाज आ जीवनक विभिन्न क्षेत्र मे ताकि कऽ आनल एगारह गोट पात्र विनोदपूर्ण चित्रण कयल गेल अछि। जे लोकनि वास्तव मे प्रणम्य छथि। एहि मे एक दिस सनातन परम्परा पर आँखि मुनि विश्वास कयनिहारसँ ल' क' अपन संस्कृतिकें छोड़ि अङ्ग्रेजियाबाबु बनबाक हास्यास्पद प्रयास कयनिहार व्यक्ति पर कटु व्यंग्यक प्रहार गेल अछि तँ दोसर दिस मिथिला मे तिलक दहेजक समस्या स्थायी आश्रमक दारुण स्थितिक जे त्रासद चित्रण कयल गेल अछि से पाठक कैं सोचबाक लेल विवश कऽ दैत अछि।

रंगशाला :- इहो हास्य कथाक संग्रह थिकनि जकर प्रकाशन 1946 मे पुस्तक भंडार लहेरियासराय सँ भेल छल। एहि मे पन्द्रह गोट कथा आ दू गोट प्रहसन अछि। एहि संग्रह मे विभिन्न टिपिकल चरित्र पर अपन हास्यमयी उर्वर कल्पना क रंग चढ़ा कथाकार ओकरा रोचक ढंग सँ प्रस्तुत कयने छथि। शीर्षक कथा मे रंगशाला बनबाक होथि आकि दरोगाजीक मोछक दरोगाजी सब चरित्र अद्भुत अछि जे हास्यक वर्षा करैत अछि। एकहि संग्रहक किछु कथा जेना रेलक अनुभव आ कन्याक जीवन संग्रहक अन्य कथा सँ सर्वथा भिन्न चरित्रक अछि जे मिथिलाक स्थिति पर आत्म विश्लेषण करबाक हेतु विवश करैत अछि। एकहि संग्रह मे बोआक दाम ओ महाराज विजय प्रहसन अछि जे पाठ्य काव्यक संग-संग दृश्य काव्य सेहो थिक। एकरा मंच पर सेहो अभिनय द्वारा प्रदर्शित कयल जा सकैत अछि।

खट्टर काकाक तरंग :- प्रो. हरिमोहन झाक ई कृति एकरा फरके विधाक सृष्टि कयलक जकरा शास्त्रार्थीय गप्पक संज्ञा देल जा सकैत अछि। हिनक ई कृति जतबे चर्चित भेल ततबे विवादित। अद्भुत प्रकारक पात्र गढ़बा मे माहिर प्रो. हरिमोहन झाक लेखनी सँ 1948 मे खट्टर काकाक सृष्टि भेल। जखन भाङक प्रेमी विनोद प्रिय खट्टर काकाक पहिल तरंग माघ शीर्षक सँ आचार्य सुमन द्वारा सम्पादित मैथिली भाषिक स्वदेश मे प्रकाशित भेल। 1948 मे बारह गोट तरंगक संग जहिना खट्टर काकाक तरंग पहिल संस्करण प्रकाशित भेल आकि मिथिलाक सनातनी परम्परावादी समुदाय मे हरबेरी मचि गेल। खट्टर काकाक अपन भाङक निशाँने जेना समस्त शास्त्र पुराणक धज्जी उड़ब" लगलाह से देखि परंपरा मे आस्था रखनिहार समुदायक भृकुटि तमि गेल। 1954 मे मिथिला मिहिर मे जनवरी सँ लऽ कऽ नवम्बर धरि खट्टर काका कैं जे विचार शुरु भेल ताहि मे प्रो. हरिमोहन झाक कोनो दशा बाँकी नही राखल गेलनि। खट्टर काकाक कारणों एकर लेखक कैं नास्तिक, परम्पराद्रोही, भारतीय सभ्यताक विरोधी पश्चिमी सभ्यताक अनुगामी आदि की-की नै कहल गेलनि ते खट्टर काकाक दिस सँ एकर लेखक सहित हुनकर पक्षधर लोकनि जबाब देबा मे पाछाँ नही रहलथिन। ई विवाद जे खट्टर काका कैं अमर बना देलकनि तँ एकबेर पुनः स्वतंत्र भारत मे मैथिली समाज कैं अपन स्थिति पर आत्म मंथन करबाक हेतु विवश कयलक। 1954 मे खट्टर काकाक तरंगक दोसर संस्करण बहरायल जाहि मे तरंगक संख्या बढ़ि कैं चौबीस भऽ गेल। एकर तेसर संस्करण 1968 मे भारती भवन पटना सँ प्रकाशित भेल जाहि मे सब मिलाय तीस गोट तरंग अछि। इहो कृति प्रो. हरिमोहन झा कैं अजस्र ख्याति प्रदान कयलनि। ई कृति देखा देलक जे एकर रचयिता मात्र हास्य रसाचार्य या व्यंग्य सम्राट नही प्रत्युत विभिन्न शास्त्रक गंभीर अध्येता आ अद्भुत तर्कवादी सेहो छलथिन जकर काट किनको लग मे नहि छनि। भांगक तरंग मे समस्त वेद-वेदांग शास्त्र पुराण, आचार विचार कैं मिथ्या सिद्ध कयनिहार खट्टर काकाक चरित्रक परिचय एहि पंक्ति सँ भेटि जाइत अछि- "एहि देश कैं मूर्खताक कारण के ? पंडित असली ब्राह्मण कतय छथि ? यूरोप-अमेरिका मे। आयुर्वेद कालक थिक। दही चूडा-चीनी सँ सांख्य दर्शन बाहर भेल। सोम रस भाङ थिक।

महादेव पहिल मैथिल छलाह। रामायण मे आदर्श चरित्र के ? रावण। सब देवता मे तेज के ? कामदेव। स्वर्ग गेले धर्म नष्ट भऽ जायब।

6. तीर्थयात्रा :- ई हिनक एक मात्र कथा तीर्थयात्रा पॉकेट साइज संस्करण थिकनि जे 1953 मे वैदेही समिति दरभंगा द्वारा प्रकाशित भेल छल। प्रो. हरिमोहन झाक ई वैह कथा थिकनि जकर लेखन ओ 1929 के अपन छात्र जीवन काल मे कयने रहथि आ जकरा मिथिलाक दोसर अंक मे प्रकाशित कयल जयबाक सूचना देल गेल छल।

7. चर्चरी :- ई विविध विधाक संग्रह थिकनि जकरा 1960 मे मैथिली प्रकाशन कलकत्ता द्वारा प्रकाशित कयल गेल छल एहि संग्रह मे तेरह गोट कथा अछि। प्रो. हरिमोहन झाक कथा साहित्य मे मास्टर पीसक गरिमा प्राप्त कथा पाँच पत्र एहि संग्रह मे आयल छनि जाहि मे मात्र पाँच गोट पात्र मे सम्पूर्ण जीवन कैं आ जीवनक समस्त आरोह अवरोह कैं अत्यंत कौशलक संग चित्रित कयल गेल अछि। प्रो. हरिमोहन झा विशिष्ट एकांकीकारो छलाह आ खट्टर काकाक चरित्र विपरित मिथिलाक प्राचीन संस्कृतिक मैथिल महापुरुष लोकनिक प्रति हुनकर हृदय मे कोन तरहक सम्मानक भाव छलनि तकर प्रमाण थिक एहि संग्रह मे संकलित हिनक दु गोट एकांकी अयाची मिश्र आ मंडन मिश्र। एकर अतिरिक्त एहि संग्रह मे एकटा छाया रूपक, एकटा पत्रात्मक रचना भोलबाबाक गप, रेलक झगड़ा आ खट्टर काकाक तीन गोट तरंग संकलित अछि। इहो पोथी पाठक कैं एकहि संग विभिन्न विधाक आस्वाद प्रदान करैत अछि।

8. एकादशी :- ई हिनक एगारह गोट कथाक संग्रह थिकनि एहि संग्रहक अधिकांश कथा चर्चरी सँ लेल गेल अछि।

9. जीवन यात्रा :- ई हिनक आत्मकथा आ हिनक अन्तिम कृति थिकनि, जकर प्रकाशन हिनक मृत्यु के बाद 1984 मे मैथिली अकादमी सँ भेल। यही पोथी पर मृत्यूपरान्त 1986 मे हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि। एहि पोथी मे प्रो. हरिमोहन झा अपन बाल्यावस्था सँ लऽ कऽ अपन छात्र जीवन, पुस्तक भंडार, प्राध्यापक जीवन, आदि अतीत प्रसंगक रोचक विवरण देने छथि। एहि पोथी के परिशिष्ट मे अपन पत्नी सुभद्रझाक मृत्यूपरान्त लिखल गेल पुष्पांजलि आ हुनका संबोधित अंतिम पत्र अछि जे अत्यन्त मार्मिक आ कारुणिक अछि। हास्य रसावतार प्रो. हरिमोहन झाक एकटा अंतिम पत्र अछि जे अत्यन्त मार्मिक आ कारुणिक अछि। हास्य रसावतार प्रो. हरिमोहन झाक एकटा फरके छवि हुनकर एहि दुनू रचना मे देखबाय मे आबैत अछि जे पाठक कैं करुण रसक उद्रेक करा दैत अछि।

10. बीछल कथा :- हरिमोहन झा - प्रो. तीस गोट बीछल कथाक संग्रह 1999 मे साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित कयल गेल। एकर सम्पादन राजमोहन झा या सुभाषचन्द्र यादव कयने छथिन। एहि संग्रहक कथा प्रो. हरिमोहन झा कथाकारकें समग्रता संग उपस्थित करैत अछि जे हिनक कथा मे मात्र हास्य-व्यंयता नहि अछि वैचारिकता आ कारुणिकता सेहो ततबे मात्रा मे अछि। ई संग्रह हिनका गल्प सम्राट रूप मे प्रतिस्थापित करैत छनि।

प्रो. हरिमोहन झाक जेहने रस गद्य रसगर होयत तेहने पद चौटगर होइत छलनि। विभिन्न अवसर पर ई कविता सेहो लिखैत रहलाह। हिनक कविताक कोनो संग्रह हिनक जीवनकाल मे प्रकाशित नहि भऽ सकलनि मुदा हिनक मृत्युक पश्चात् हिनक सुयोग्य साहित्यकार पुत्र श्री राजमोहन झा आरम्भक एक गोट अंक मे हिनक अधिकांश कविता कैं प्रकाशित करौलनि अछि। हिनक ढ़लाझा टी पार्टी, निरसन मासा, छूटरकाका, अङ्ग्रेजिया, लडकी समुदाउन आदि प्रसिद्ध कविता छनि। अपन गद्यक सदृशहि अपन पद्यो मे प्रो. हरिमोहन झा मिथिलाक सामाजिक विसंगति, आत्यघाती पुरातन प्रियता आदि पर निर्भीकतापूर्वक चोट कयने छनि जे केकरो तिलमिला दैत अछि।

उपसंहार - निष्कर्षतः प्रो. हरिमोहन झाक समस्त जीवन आ कृतित्वक सम्बन्ध मे यह कहल जा सकैत अछि जे अपन प्रतिभा आ संघर्षक बल पर ओ जीवन मे निरन्तर आगु बढ़ैत रहलाह। एकटा आदर्श पुत्र, एकटा आदर्श पिता, एकटा आदर्श अभिभावक लेखन हिनका लेल कोनो रजनी-सजनी के खेल इमानदारी पूर्वक करैत रहलाह। साहित्य लेखन हिनका लेल कोनो रजनीक खेल वा स्वान्तः सुखाय बला वृति नहि छलनि। साहित्य हिनका लेल साधना छलनि जकर उद्देश्य मिथिलाक सामाजिक परिवर्तन, स्त्री शिक्षा प्रचार, बौद्धिकता आ तार्किकता विकास करब छलनि। अपन चिन्तन कैं सामान्य जनसमुदाय धरि सम्प्रेषित भेल आ भऽ रहल अछि। प्रो. हरिमोहन झा कहियो अपन कैं कोनो वाद मे आवृत्ति नही कयलनि, कोनो विचारधार विशेषक झण्डा नही उचलनि। हुनका प्रथम आ अन्तिम उद्देश्य मे सफल रहलाह। अपन जीवितेहि अवस्थामे मिथकीय पुरुष बनि गेलाह। मैथिली गद्यक अभिनव विद्यापति प्रो. हरिमोहन झा आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक प्रतिष्ठापकक रूप मे चिर काल धरि जानल जाइत रहलाह।

सन्दर्भ :-

(1) श्रीस दुर्गानाथ झा :- मैथिली साहित्यक इतिहास

(2) परिचायिका - भीमनाथ झा

(3) बीछल कथा :- साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

(4) डा. अमरेश पाठक - मैथिली उपन्यास आलोचनात्मक अध्ययन

(5) मैथिली साहित्यक इतिहास :- प्रो. मायानन्द मिश्र